International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 214-216

महाभारत की ऐतिहासिकता

डॉ. भरत कुमार
अतिथि प्रवक्ता, संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

लौकिक साहित्याकाश में भारतीय मनीषा का चरमोत्कर्ष महाभारत महाकाव्य में दिखाई देता है। इस महाकाव्य में तत्कालीन समस्त साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक, अध्यात्मिक, भौगोलिक तथा विज्ञान, दर्शन, ज्योतिष एवं आयुर्वेद आदि जितने भी विषय थे सबका समन्वय इसमें प्रत्यक्ष होता है। भगवान् वेदव्यास की यह इच्छा थी कि इस महाकाव्य से कोई विषय अछूता न रह जाय। उन्होंने अपनी इस इच्छा को यथार्थ रूप भीप्रदान किया। 'आदि पर्व' में स्वयं उन्होंने इसका प्रमाण दिया है–

धर्मे अर्थे च कामे च मोक्षे च भारतषर्भ ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित् ।।[1]

इस विशालतम ग्रन्थ 'शतसाहस्री संहिता' के नाम से भीअ िहित किया जाता है। किन्तु विषयज्ञान की दृष्टि से महाभारत जितना अधिक ख्याति को प्राप्त हुआ, उतना ही काल–निर्णय की दृष्टि से विद्वानों के मध्य विवाद का विषय भी बना। इसके प्रमुख कारण द्रष्टव्य है –

1. 18वीं सदी के आस–पास पाश्चात्त्य विद्वानों ने भारतीय धर्मशास्त्र एवं दर्शन् पर विचार आरम् किया क्योंकि तत्कालीन परिस्थितियों में भारतीय विद्वानों द्वारा इस पर विशेष विचार नहीं किया जा रहा था। इसलिए पाश्चात्त्य विद्वानों के मतों को बिना किसी परीक्षण के स्वीकार कर लिया गया। इसी कारण भी महाभारत का काल विवादित हुआ।
2. पाश्चात्त्य विद्वानों द्वारा महाभारत के युद्ध को वास्तविक और ऐतिहासिक घटना न मानना।
3. महाभारत के पात्रों को ऐतिहासिक न मानना।
4. महाभारत में रचनाकाल सम्बन्धी किसी तिथि का स्पष्ट उल्लेख न होना।
5. महाभारत के विकास के जय, भारत एवं महाभारत इन तीन चरणों को मानकर इसका समय 200ई0 तक मान लेना।[2]

महाभारत के आदि पर्व में महाभारत के उद्भव एवं विकास से सम्बन्धित कतिपय सूचनाएं मिलती हैं। ध्यान से विचार करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि महाभारत के जय, भारत एवं महाभारत ये तीन चरण नहीं थे। यद्यपि अधिकाशं विद्वान् तीन चरणों वाले महाभारत की बात स्वीकार करते हैं, किन्तु यह तर्कसंगत नहीं प्रतीत होता। महान विद्वान् और महाभारत के अध्ययन पर अपना जीवन समर्पित करने वाले डॉ. विनायक वैद्य महाभारत के भारत एवं महाभारत दो ही चरण मानते हैं।[3] डॉ. कपिलदेव द्विवेदी ने भी इसके दो चरण स्वीकार किये हैं।[4] व्यास का मूल ग्रन्थ भारत 24 हजार श्लोकों का था उसमें उपाख्यान नही थे। ऐसा अदित्रदेव विद्यालंकार ने अपनी पुस्तक 'आयुर्वेद का वृहद् इतिहास' में स्वीकार किया है।[5] 'आश्वलायन गृह्यसूत्र' भी भारत एवं महाभारत की ही सूचना देता है, जय की नही।[6] इससे स्पष्ट होता है कि महाभारत के दो ही चरण थे तीन नहीं, किन्तु वासुदेव पोद्दार महोदय ने अपनी पुस्तक 'रामायण महाभारत काल इतिहास सिद्वान्त' में स्पष्ट किया है कि मूल महाभारत ही एक लाख श्लोकों वाला था जिसकी रचना कृ ष्णद्वैपायन वेदव्यास ने की थी और जिन 24000 श्लोंको वाले भारत का उल्लेख मिलता है वह उपाख्यानों से रहित भारत संहिता थी[7] जैसा कि श्लोक से स्पष्ट है–

चतुर्विंशतिसाहस्रीं चक्रे भारत संहिताम्। उपाख्यानैर्विना तावद् भारतं प्रोच्यतेवुधैः।।[8]

महाभारत के तीन चरण थे अथवा नहीं यह अत्यन्त विवादित है। इस बात पर विद्वानों में वैचारिक मतभेद है। इसलिए महाभारत के कितने चरण थे इस पर गहन अध्ययन की आवश्यकता है। उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर ऐसा प्रतीत होता है कि मूल भारत संहिता वेदव्यास की कृति थी और महाभारत उसका संस्करण था, किन्तु संस्करण बदल जाने से किसी घटना की प्राचीनता नहीं बदल जाती है। इसलिए इस शोध–पत्र में इस बात को बताने का प्रयास किया है कि महाभारत के दो चरण है–प्रथम मूल (भारत संहिता) तथा द्वितीय, उसका परवर्ती संस्करण।

महाभारत का काल निर्धारण करते समय केवल साहित्यिक एवं पाश्चात्त्य विद्वानों के विवरणों पर ही निर्भर नहीं रहना चाहिए अपितु पुरातात्त्विक, अभिलेखीय प्रमाण, नक्षत्र गणना, भूगर्भीय परिवर्तन, महाभारत –युद्ध तथा कृष्ण के समय पर भी विचार करने की आवश्यकता है क्योंकि कृष्ण वेदव्यास के समकालीन थे। यहाँ महाभारत के काल निर्णय से सम्बन्धित प्रमुख विद्वानों के विचार द्रष्टव्य हैं –

वेबर के अनुसार मेगस्थनीज चन्द्रगुप्त के समय में भारत आया था। उसने एक लाख श्लोकों वाले महाभारत के विषय में कोई सूचना नहीं दी है।[9] इसलिए महाभारत इसके बाद की रचना है। विन्टरनित्स ने नौ ऐतिहासिक आधार दिये जिसका निष्कर्ष है– महाभारत में कुछ ऐसे आख्यान उपाख्यान हैं जिनका सम्बन्ध वैदिक साहित्य के युग तक पहुँचता है तथा उसमें अनेक सूक्तियाँ एवं नीतिपरक कथाएँ इस प्रकार की है जो जैन एवं बौद्ध सम्प्रदायों से सम्बन्धित है। तथा उनका समय 600 ई0पू0 तक जाता है इस आधार पर प्राचीन महाभारत का स्वरूप 400 ई0पू0 तथा वर्तमान स्वरूप 400 ई0 तक ठहरता है।[10]

एच0याकोबी महाभारत के विकास को चार सोपानो में विभक्त करते है– प्रथम 400 ई0पू0 द्वितीय 200–400 ई0पू0 तक, तृतीय 300 ई0पू0 से 100 या 200 ई0 तक, चतुर्थ 400 ई0 अतः इनके मत से स्पष्ट है कि 400 ई0पू0 से 400 ई0 तक इनमें जोड़ घटाव होते रहें है।[11]

सिल्वा लेवी और हॉपकिन्स के अनुसार–सातवीं ई0 के अन्त और आठवी ई0 के आरम्भ में प्रसिद्ध मीमांसक कुमाररिलभट्ट ने महाभारत को स्मृति ग्रन्थ कहकर सभी पर्वो से उदाहरण दिये हैं। इनके मतानुसार सातवीं सदी के कवि बाण और सुबन्धु ने अपनी कृ तियों में व्यास एवं महाभारत का सादर उल्लेख किया है तथा 422 ई0 के गुप्त शिलालेखों में महाभारत का वर्णन 'शतसाहस्रीं संहिता' के रूप में किया गया है। इस आधार पर सिल्वा लेवी, हॉपकिन्स ने

200 ई0 के आस–पास महाभारत का काल निर्धारित किया।[12] हॉपकिन्स के अनुसार कृष्ण के ईश्वर रूप की कल्पना को महाभारत में 200 ई0पू0 से 200 ई0 के मध्य बढा चढाकर जोड़ा गया।[13]

उपर्युक्त पाश्चात्त्य विद्वानों के मतो के आधार पर यह कहा जा सकता है कि महाभारत का विकास 400 ई0पू0 से आरम्भ होकर 400 ई0 में पूर्णता को प्राप्त हुआ। पाश्चात्त्य विद्वानों के अनन्तर भारतीय विद्वानों के मतानुसार महाभारत का काल द्रष्टव्य है–

1. 'आश्वलायन गृह्यसूत्र' के 'ऋषितर्पण' में भारत एवं महाभारत का स्पष्ट उल्लेख है–

   सुमंतु–जैमिनी–वैशम्पायन–पैल–सूत्र– भाष्य भारत –महाभारत धर्माचार्यः।

इसका समय कम से कम 400 ई0पू0 है।

2. डायोक्रायसोस्टोम नामक यूनानी लेखक 50 ई0 में पाण्ड्य देश की यात्रा पर भारत आया जिसने अपने संस्मरण में यह लिखा कि भारत में एक लाख श्लोकों वाला इलियड है। जो महाभारत का सूचक है।[14]
3. 'वौधायन गृह्यसूत्र' जिसमें गीता के नवें अध्याय का एक श्लोक मिलता है–

   पत्रं पुष्पं फलं तोयं योगे भवत्या प्रयच्छति।
   तदहं भवत्युतपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः।। गीता 926।

इसका समय कम से कम 400 ई0पू0 माना जाता है।[15] अतः उपर्युक्त प्रमाणों के आधार पर कहा जा सकता है कि महाभारत कम से कम 400 ई0पू0 से अर्वाचीन नहीं हो सकता।

ग्रीक विद्वानों के विवरणों से भी महाभारत के काल निर्धारण में बहुत सहायता मिलती है महाभारत के काल निर्धारण में ग्रीक विद्वानों का विवरण इस प्रकार है–

1. मेगस्थनीज के अनुसार चन्द्रगुप्त (320 ई0पू0) से पहले 138 राजाओं के पूर्व कृष्ण का समय आता है। यदि एक व्यक्ति का शासन 35 वर्ष माना जाय तो 320+4830 = 5150 ई0पू0 कृष्ण का समय आता है–
2. एरियस (250ई0 से 326 ई0) के अनुसार–153 राजाओं ने कृष्ण के बाद शासन किया। तदन्तर चन्द्रगुप्त का समय आता है। इस प्रकार कृष्ण का समय– 5771 ई0पू0 जाता है।
3. प्लिनी के अनुसार– चन्द्रगुप्त से पहले 154 राजाओं के शासनकाल के पूर्व कृष्ण का समय आता है[16] इसके अनुसार कृष्ण का समय लग ग 6000 ई0पू0 के आस पास जाता है।

ग्रीक विद्वानों के विचारों के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि कृष्ण का आवि र्भाव 5150 से 6000 ई0पू0 के मध्य किसी समय हुआ। चूंकि वेदव्यास कृष्ण के समकालीन थे। इसलिए महाभारत का काल भीलग ग यही स्वीकार किया जाना चाहिए।

श्रीमद्भागवत के अनुसार कलियुग के आरम्भ का समय 3101 ई0पू0 है जबकि इसमें परीक्षित का यही समय उल्लिखित है। श्रीमद्भागवत के वर्णन के अनुसार 28 कौरव राजाओं ने 1273 वर्ष तक शासन किया, मगध में 22 राजाओं ने 1000 वर्ष, प्रध्येत वंश 5 राजा–138 वर्ष, शिशुनागवंश 10 राजा 360 वर्ष, 9 नन्द राजाओं ने 100 वर्ष तक शासन किया इस प्रकार कुल 74 राजाओं ने 2871 वर्ष तक शासन किया। इस आधार पर प्रति राजा का शासन काल 38.79 वर्ष आता है।[17] पी0वी0 वर्तक के अनुसार मेगस्थनीज द्वारा बताये गये 138 राजाओं की संख्या से ागवद् में उल्लिखित 74 राजाओं की संख्या घटाने पर 64 राजा लुप्त मिलते है। यदि इसमें 64 राजाओं का शासन काल जोड़ दिया जाये तो 2871+2482 = 5354 वर्ष पूर्व आता है और इसमें चन्द्रगुप्त का समय जोड़ने पर 5354+325 = 674 वर्ष पूर्व परीक्षित का समय आता है। मेगस्थनीज ने जिन 138 राजाओं का वर्णन किया है उनका भी समय लगभग इतना ही आता है।[18] अतः भागवतपुराण की अपेक्षा मेगस्थनीज का विवरण सही प्रतीत होता है।

जिमी वेल्स ने दो पुरातत्त्विक प्रमाणों सरस्वती एवं द्वारका के आधार पर महाभारत का समय 3000–5000 ई0पू0 के मध्य माना है। प्रथम, महाभारत के अनुसार बलराम ने सरस्वती नदी के तट से 'प्र ासतीर्थ' तक की यात्रा की। यह नदी 5000–3000 ई0पू0 में पूरे प्रवाह से बहती थी। द्वितीय–पुरातत्व वि ाग ने गुजरात के पश्चिमी तट पर समुद्र में डूबे कुछ शहर खोज निकाले। डॉ0 एस0राव ने इसे द्वारका सिद्ध किया है।[19] इसका समय लग ग 7500 ई0पू0 तक जाता है।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि महाभारत कालीन घटनाएं 5000–6000 ई0पू0 के आसपास किसी समय घटी। द्वारका का पुरातात्विक प्रमाण इस घटना की प्राचीनता को 7500 ई0पू0 तक ले जाता है। अधिकांश प्रमाणों से कृष्ण, महाभारत युद्ध तथा परीक्षित आदि के समय के विषय में सूचना प्राप्त होती है। ये समस्त घटनाएं समकालीन है तथा इनके समय में 50 से 100 वर्ष का अन्तर हो सकता है। वेदव्यास कृष्ण के समकालीन थे तथा यही महाभारत के रचनाकार माने जाते हैं। इसलिए महाभारत का रचनाकाल कम से कम 5000 ई0पू0से अधिक अर्वाचीन नहीं प्रतीत होता है। लेकिन महाभारत के रचनाकाल को बताने के लिए और अधिक तथ्यों को जुटाने तथा इस पर गहन अध्ययन कि आवश्यकता है इसके साथ–साथ विद्वानों को महाभारत के काल निर्धारण के लिए एक नये दृष्टिकोण को अपनाने की आवश्यकता है।

पााश्चात्य विद्वानों के तथ्यों से यह स्पष्ट है कि उन्होंने महाभारत के काल निर्णय पर निरपेक्ष दृष्टि से विचार नहीं किया तथा इसके विकास के तीन अथवा चार चरण मानकर इसे 400 ईसा पूर्व के 400 वर्ष बाद तक की रचना स्वीकार किया। पाश्चात्त्य विद्वानों द्वारा महाभारत को अर्वाचीन सिद्व करने का सं वतः मुख्य कारण यह भी है कि बाइबिल सृष्टि की उत्पत्ति 6000 ई0पू0 स्वीकार करती है कदाचित् इसलिए उनकी सोच इससे आगे नहीं जा सकी और उन्होंने महाभारत काल को ईसा के आस–पास सिद्ध करने का प्रयत्न किया। इसके विपरीत आश्वलायन का 'गृह्यसूत्र', धर्मसूत्र तथा बौधायन गृह्यसूत्र जिसमें गीता के नवें अध्याय के श्लोक से स्पष्ट है कि कम से कम इससे पूर्व महाभारत का पूर्ण विकास हो चुका था। अतः इस आधार पर पाश्चात्त्य विद्वानो का मत खण्डित हो जाता है।

मैक्समूलर महोदय ने नक्षत्र गणना को हास्यापद बताया है जबकि महाभारत के काल निर्णय में इसका महत्वपूर्ण योगदान है। इसका मुख्य कारण यह है कि पाश्चात्त्य देशों में नक्षत्र गणना जैसी कोई अवधारणा नहीं थी। जबकि 'वास्तविक रामायण' नामक पुस्तक में कहा गया है कि भारत में 32000 ई0पू0 से हमारे प्राचीन ऋषि नक्षत्र गणना करने लगे थे। इसमें यह भी स्पष्ट किया गया है कि भारत में 72000 ई0पू0 में सभ्यता विद्यमान थी तब कोलम्बस के अमेरिका की खोज करने से बहुत पहले 17000 ई0पू0 में द्रविड अमेरिका पहुँच चुके थे।[20] अतः जब हमारी संस्कृति इतनी प्राचीन है तो महाभारत की रचना 5000 ई0पू0 के आस–पास क्यों नही मानी जा सकती जबकि अधिकांश प्रमाण इस बात की पुष्टि करते है। यद्यपि वर्तमान में कुछ पाश्चात्त्य विद्वानों ने इस दिशा में सराहनीय कार्य किया है। यथा जिमी वेल्स ने महाभारत का समय लग ग 3000 से 5000 ई0पू0 के मध्य माना तथा उन्होंने पी0वी0 वर्तक महोदय द्वारा माने गये महाभारत युद्ध के समय का समर्थन किया। वर्तक महोदय ने नक्षत्र गणना के आधार पर महाभारत का काल

5561 ई0पू0 स्वीकार किया।[21] वर्तमान में अनेक पाश्चात्त्य एवं भारतीय विद्वान भी वर्तक महोदय के मत को सही मानते हैं।
अतः स्पष्ट है कि महाभारत की रचना कम से कम 5000 ई0पू0 से अर्वाचीन नहीं प्रतीत होती है।

सन्दर्भ सूची

1. महाभारत आदिपर्व 62/53
2. कपिलदेव द्विवेदी : संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, पृ. 121
3. वाचस्पति गैरोला : संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ. 211
4. कपिलदेव द्विवेदी : संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, पृ. 120
5. अदित्रदेव विद्यालंकारः आयुर्वेद का वृहद् इतिहास पृ. 19
6. बालगंगाधर तिलक : गीतारहस्य, पृ. 343
7. वासुदेव पोद्दार : रामायण महाभारत काल इतिहास सिद्धान्त, पृ. 185 से 189
8. महाभारत : आदिपर्व, श्लोक सं. 3
9. वासुदेव पोद्दार : रामायण महाभारत काल इतिहास सिद्धान्त, पृ. 119
10. वाचस्पति गैरोला : संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ. 219
11. वासुदेव पोद्दार : रामायण महाभारत काल इतिहास सिद्धान्त, पृ. 202
12. बलदेव उपाध्याय : संस्कृत साहित्य का वृहद् इतिहास, पृ. 442
13. रामायण महाभारत काल इतिहास सिद्धान्त, पृ. 67
14. आश्वलायन गृह्यसूत्रः 3.4.4
15. कपिलदेव द्विवेदी : संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, पृ. 122
16. गीतारहस्य पृ. 366
17. वी0वर्तकः द साइन्टिफिक डेट आफ महाभारत वार लेख से
18. श्रीमद्भागवत द्वादश स्कन्ध, श्लोक संख्या 2–10
19. वी0वर्तकः द साइन्टिफिक डेट आफ महाभारत वार लेख से
20. जिमी वेल्सः डेट आफ महाभारत वार लेख से
21. वास्तविक रामायण
22. की.वी. वर्तक : द साइटिकिक डेट आफ महाभारत वार, लेख से